रात्रि क्लास 30.6.68 – बच्चे जानते हैं 63 जन्म रहे हैं रावण राज्य में। अभी यह है अन्तिम जन्म। अभी बदली होती है रामराज्य में। फिर रामराज्य से रावणराज्य में भी ऐसे ही बदली होते हैं। वहाँ है गिरने की बात, यहाँ है चढ़ने का बात। यह नालेज है हम रावण राज्य में गिरे कैसे हैं। अनायास ही रावण राज्य में गये अर्थात् पतित हो पड़े। यह भी बच्चों को मालूम पड़ा है। तिथी तारीख का भी मालूम पड़ा है। अभी यह है चढ़ने की बात। चढ़ना है एक जन्म में। और कोई तकलीफ नहीं। सिर्फ याद करना है। यहाँ बैठ याद करते हो। बच्चों को स्वतंत्रता है घूमते–फिरते याद कर सकते हो कितना भी पैदल करो याद में कोई थकावट नहीं होगी। घूमने का घूमना याद की याद। दो घंटा सुबह–शाम को घूमने जाओ वह तो याद के लिए बहुत ही सहज है। सारा दिन ज्ञान और योग। यहाँ और धंधा ही नहीं। बाहर घर में यह फुर्सत नहीं। यहाँ तो कोई फिकरात नहीं। खान–पान पकाने करने का भी फुर्णा नहीं। यहाँ बहुत अच्छा रिफ्रेश हो सकते हैं बच्चे। बाप

समझाते हैं वृद्ध अवस्था वाले को भी तकलीफ नहीं। सिर्फ अपन को आत्मा समझो। मैं आत्मा हूँ। जैसे वह कहते हैं अल्ला हूँ, अल्ला हूँ। तुम यह पक्का करो। आत्मा में ही संस्कार भरती हू(है)। ..... दैवीगुण भी चाहिए। बहुत मीठा बनना होता है। आदत पड़ जाती है। हर बात में अपन को मीठा बनाते रहो। और थोड़ा बोलना। जास्ती बोलने की दरकार नहीं। भक्ति–मार्ग में सारा दिन टां–टां करते गीत गाते रहते हैं। बाबा गीत आदि पसन्द नहीं करते। गीत तो भक्तिमार्ग में बहुत गाये, टाइम वेस्ट होता गया। गीत सीखने से याद में रहना अच्छा है। याद से ही विकर्म विनाश होंगे। गीत बनाने से विकर्म विनाश नहीं होते हैं। और यहाँ बोलने की दरकार नहीं। घर में बात करो वह भी बड़ी सूक्ष्म। आदत पड़ जानी चाहिए। दो बोलें तो तीसरा न बोले। आवाज़ न हो। शुद्धता बहुत अच्छी चाहिए तुम बच्चों में। हरेक बात में शुद्धता। यहाँ बहुत बच्चे आते हैं; इसलिए शान्ति नहीं हो सकती। घर में तो दो–चार रहते हैं। शान्ति होगी तो सभी कहेंगे यहाँ तो बहुत शान्ति है। कोई वहाँ से पास करेंगे तो शान्ति का प्रभाव पड़ेगा। तुम शान्त सीखते हो। कैसे अशरीरी हो बैठें। शरीर से अलग हो जावें। शरीर से अलग हो जावें। फिर शरीर छोड़कर चले जावेंगे। शरीर में ममत्व न होना चाहिए। बीमारी आदि होती है यह हिसाब–किताब चुक्तू होता है। फिर आधा कल्प यह कुछ होगा नहीं। खुशी ही बीमारी को हप कर देंगी। मुख मलीन न होना चाहिए बीमारी में। हर्षितमुख। शरीर छोड़ें तो भी समझे यह तो मुस्करा रहा है। पिछाड़ी में मुस्कराहट रहेंगी। हम जाते हैं शान्तिधाम फिर सुखधाम आवेंगे। सदैव यह मुस्कराहट रहे। गुप्त खुशी रहती है। तो हर्षितमुख चाहिए। मुरझाया हुआ मुख न हो। तुम बच्चों को तो बहुत2 ऊँच पद मिलता है बाप से। यह नई बात भी नहीं। कल्प2 बाबा वरसा देते हैं। अभी बाकी थोड़ा समय है। बाप कहते हैं 63 जन्म विकारों में गिरे हो। अभी एक जन्म न गिरे तो क्या। देवता बनने लिए पवित्र क्यों नहीं बनते हो। अपवित्रता का ख्याल भी नहीं उठना चाहिए। अभी तो बाप से बादशाही लेना है। मायावी ख्यालात को उड़ा देना चाहिए। लड्डू न बनना है। घासलेट लड्डू भी नहीं। फीके लड्डू भी नहीं बनना चाहिए। हाथ तब चलता है जब शरीर पर दृष्टि पड़ती है। कोई भी ख्यालात न आये तब यह ल0ना0 बनेंगे। हम पढ़ते हैं नई दुनिया विश्व का मालिक बनने। हम प्रिन्स बनेंगे इस निश्चय में रहो। हम प्रिन्स–प्रिन्सेज बनेंगे। बच्चों को बहुत–2 खुशी चाहिए। यहाँ कुछ भी जेवर आदि नहीं। फुर्णा नहीं। जेवर भल वहाँ ही रखकर आओ। यहाँ फुर्णा न रहे कोई भी। कोई चीज़ होगी तो याद पड़ेगी। न होगी तो याद भी नहीं पड़ेगी। फुली पहनते हैं यह भी निभाग की निशानी है। न कि सुहाग की। यह पहनने से ही निभाग शुरू होता है। न थी तो कुमारी थी, सौभाग्यवती थी। बच्चे समझते हैं भारत अभी 100% निभागा है। मनुष्यों को थोड़े ही पता है हमारे पर हमारे पर राहू की दशा है। तुमको याद है हम बृहस्पत की दशा में थे हम मालिक थे। अभी कंगाल बन पड़े हैं। राहू की दशा। अभी फिर बृहस्पत की दशा बैठता है। कोशिश करनी चाहिए बृहस्पती की दशा की। शुभ रेस करनी चाहिए इन जैसे

भविष्य में बनूँगा। तो बहुत सर्विस करते हैं वही माला का दाना बनते हैं। तो हम भी क्यों नहीं उसमें लग जावें। माताओं को तो बहुत खड़ा होना चाहिए। अपने साथियों को भी संदेश सुनाना है। आस–पास वाले झट भागेंगे। आओ सेकेण्ड में विश्व की बादशाही कैसे मिलती है हम समझावें। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति। तुम्हारे सिवाय कोई भी दो बाप का राज़ बता न सके। एक हद का वरसा देते हैं एक बेहद का। कब किसकी बुद्धि में भी न होगा यह दो बाप की बहुत बात है। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। विश्व का मालिक बन जावेंगे। तुम बहुतों की सर्विस घर बैठे कर सकती हो। घर बैठे2 यात्रा कर सकती हो। वह ब्राह्मण धक्का खिलाते हैं। सभी की बुद्धि का ताला खोलने का है। आगे चलते जाओ। बहुत अच्छा है जो कुछ भी नहीं पढ़ी हो। न शास्त्र काम आवेंगे न नावेल ही काम में आवेंगी। एक ही बाप की शिक्षा काम आवेगी। इसका वजन बहुत भारी है। तुम जानते हो बेहद का बाप मिला है तो काँटें से फूल बन जाना चाहिए। इतनी खुशी होनी चाहिए। माया के राज्य में तो बकरियाँ रिढ बन जाते हैं। यहाँ तो महावीरणी बननी है। बाप

को याद करो तो विकर्म विनाश हो जाये। जितना याद करेंगे महावीरणी बनेंगे। महावीर वह जो बाप को याद करे। ऐसे नहीं कहे भूल जाते हैं। माया को उड़ा देना है। कितना भी माया हैरान करे। जितना चाहिए माथा मारो। हम तो अपने बाप से वरसा लेंगे। बाबा और कुछ भी मेहनत नहीं देते हैं। खाओ–पीओ, बच्चे आदि को दूध पिलाओ। जो चाहिए सो करो याद करो बाप को। पहले सबक सीखो मैं आत्मा हूँ। तो बाप भी याद आ जावेगा। यह याद ही साथ चलेगी। नालेज साथ नहीं चलेगी। वहाँ भूल जावेंगे। फिर तुम्हारे रिकार्ड में राजधानी भोगने का पार्ट है। नालेज यहाँ की यहाँ ही रह जावेगी। यहाँ कहा जाता है बीती को चितवो नहीं। हर बात में खुशी ही होनी चाहिए। पेट के लिए भी इतना जास्ती नहीं करना चाहिए। पेट क्या दो रोटी मांगता है। इससे तो हम अपने बाप को याद करें। वह अच्छा है। जास्ती पैसे की दरकार नहीं। तुम माताओं का तो पैसा चाहिए नहीं। तुम फ्री हो। बैज तुम्हारा निशानी है। लज्जा न करो पहनने की। घड़ा होगा झट किसको भी समझावेंगे। यह बेहद का बाप है। भगवान आते हैं जरूर। यह बाबा है इन द्वारा यह पद दे रहे हैं। सभी को पैगाम देते रहो। ट्रेन में भी तुम सभी को पैगाम दो। ऐसे सर्विस करो तब तुमको खुशी भी हो। कुमारियों के लिए तो सहज है। ट्रेन भी चढ़ें हो तो फिर उतरो फिर दूसरे डिब्बे में। हमारा भारत कितना साहुकार था। हम क्या थे। अभी समझते हो जब बाप मिला है। माया ने कितना नीचे गिराया है। बहुत धोखा दिया है। सुनाने वाला भी आत्मा है तो सुनने वाली भी आत्मा है। अच्छा बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।